بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-03.11.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

तहरीके जदीद के छटे दफ़्तर का बरकत पूर्ण प्रारम्भ।

नवासिवें (89) साल में जमाअत के लोगों की ओर से पेश की जाने वाली क़ुर्बानियों का वर्णन तथा नव्वेवें (90) वर्ष के आरम्भ होने की घोषणा।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 03 नवम्बर 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः और सूरः आले इमरान की आयत स. 93 की तिलावत तथा अनुवाद के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- इस आयत में अल्लाह तआला ने स्पष्ट रूप से फ़रमा दिया है कि नेकी के उच्चतम स्तर उसी समय प्राप्त होते हैं जब तुम ख़ुदा तआला की ख़ुशी पाने के लिए अल्लाह तआला की राह में वह ख़र्च करो जिससे तुम प्यार करते हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इसको स्पष्ट करते हुए फ़रमाते हैं कि तुम वास्तविक नेकी को जो मुक्ति के मार्ग तक पहुंचाती है कदाचित प्राप्त नहीं कर सकते सिवाए इसके कि तुम ख़ुदा तआला की राह में वह माल तथा वे वस्तुएँ ख़र्च करो जो तुम्हें प्यारी हैं। फिर एक स्थान पर फ़रमाया कि माल के साथ मुहब्बत नहीं चाहिए। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम कदापि नेकी को नहीं पा सकते जब तक तुम उन चीज़ों में से अल्लाह तआला की राह में ख़र्च न करो जिनसे तुम प्यार करते हो। फ़रमाया- बेकार तथा व्यर्थ चीज़ों के ख़र्च से कोई आदमी नेकी का दावा नहीं कर सकता, नेकी का द्वार तंग है। अतः यह बात मस्तिष्क में बिठा लो कि बेकार की चीज़ों के ख़र्च से कोई उसमें दाख़िल नहीं हो सकता क्यूँकि जब तक प्यारी से प्यारी तथा प्रिय वस्तुओं को ख़र्च न करोगे उस समय तक प्रियतम होने का स्तर नहीं मिल सकता। यदि कठिनाई उठाना नहीं चाहते तथा वास्तविक नेकी को धारण करना नहीं चाहते तो क्यूँकर कामयाब एवं सफल हो सकते हो। फ़रमाया कि क्या सहाबा किराम रज़ी. मुफ़्त में उस स्तर तक पहुंच गए? जो उनको मिला। ख़ुदा तआला की प्रसन्नता जो वास्तविक ख़ुशी का साधन है, प्राप्त नहीं हो सकती जब तक अस्थाई कठिनाईयाँ सहन न की जावें, ख़ुदा ठगा नहीं जाता।

मुबारक हैं वे लोग जो अल्लाह की ख़ुशी पाने के लिए कठिनाईयों की चिंता न करें, क्यूँकि कि स्थाई ख़ुशी तथा स्थाई आराम की रोशनी उस अस्थाई कष्ट के बाद मोमिन को मिलती है। अतः यह वह माल ख़र्च करने का अनुभव है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के आदेशानुसार हम में पैदा करना चाहते हैं तथा यह जमाअत पर एवं हर अहमदी पर अल्लाह तआला का बड़ा उपकार है जिसने इस बात को समझा तथा उसने अपना माल दीन के रास्ते में ख़र्च करने के लिए पेश किया।

जमाअत के लोगों की बड़ी संख्या अपनी आवश्यकताओं के बावजूद अपना धन दीन की आवश्यकताओं के लिए पेश करती है, हज़ारों उदाहरण ऐसे हैं। आजकल हम देखते हैं कि दुनिया की आर्थिक स्थिति ख़राब से ख़राब होती जा रही है। उन्नत देशों का विशेषतः एवं उन्नतिशील देशों की भी अब वह स्थिति नहीं रही। रूस तथा यूक्रेन के युद्ध ने भी स्थिति को बिगाड़ दिया है। फिर इन देशों के राजनेताओं के घुटालों ने भी स्थिति ख़राब कर दी है परन्तु इसके बावजूद अहमदी अपने धन के बलिदान में आगे बढ़ते चले जा रहे हैं। दुनियादार की दृष्टि से इसको समझना कठिन है परन्तु जिनके ईमान सुदृढ़ हैं उन्हें पता है कि यह क़ुर्बानी इस लिए है कि इसके परिणाम स्वरूप अल्लाह तआला के फ़ज़्ल नज़र आते हैं। नवम्बर के पहले सप्ताह में तहरीके जदीद के नव वर्ष की घोषणा होती है तो तहरीके जदीद के संदर्भ में ही वृत्तांत पेश करूँगा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने जब तहरीके जदीद का ऐलान फ़रमाया था तथा उस समय जो मांग रखी थी उनमें महिलाओं के धन क़ुर्बान करने के विषय में यह भी था कि आभूषण न बनाएँ अथवा कम बनाएँ, क़ुर्बानी करें। उस समय भी तथा आज भी महिलाएँ क़ुर्बानी दे रही हैं, कुछ महिलाएँ तो अपने सारे आभूषण चन्दे में दे देती हैं।

निर्धन लोग हैं जो अपना पेट काट कर चन्दा देते हैं तथा अनेक ऐसे भी हैं कि अल्लाह तआला की कृपा उन पर हो जाती है। धनवान लोग भी उनसे सीख लें तथा अपने बलिदानों के स्तर को बढ़ाएँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने फ़रमाया था कि निर्धन लोग ऐसे भी हैं जो अपनी एक महीने की आय का पैंतालीस प्रतिशत दे देते हैं तथा धनवान केवल डेढ़ प्रतिशत देते हैं। बल्कि अब तो निर्धनों में भी ऐसे हैं जो शत प्रतिशत दे देते हैं तथा धनवान लोग एक प्रतिशत देते हैं अतः इस दृष्टि से निर्धनों की क़ुर्बानी का स्तर अत्यंत उच्च कोटि का है। इस दृष्टि से समृद्ध लोगों को भी अपना निरीक्षण करना चाहिए। याद रखें कि अल्लाह तआला कभी उधार नहीं रखता जैसा कि क़ुर्आन करीम में एक अन्य स्थान पर फ़रमाया कि सात सौ गुणा अथवा इससे भी अधिक बढ़ाकर देता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने गिनी बसाऊ, फ़िजी, मलावी, तंज़ानिया, नाईजेरिया सहित कुछ देशों में तहरीके जदीद के मैदान में धन का बलिदान करने वालों के कुछ उदाहरण पेश करते हुए फ़रमाया कि कहाँ तो जमाअत के दुष्ट विरोधी जमाअत को नष्ट करने के लिए ज़ोर लगा रहे थे और फिर देखें कैसे अल्लाह तआला ने नौमुबाईअीन के दिल में जमाअत के लिए बलिदान की प्रेरणा उत्पन्न की तथा फिर उनको प्रदान भी कर रहा है। क्या इन विरोधियों की फूंकों से यह दिया बुझ सकता है जो अल्लाह तआला ने जलाया हो। जितना चाहें ज़ोर लगा लें, असफलता एवं निराशा ही विरोधियों के भागय में लिखी है तथा जमाअत दुनिया के हर कोने में बलिदानों के उदाहरण स्थापित करते हुए उन्नति करती चली जा रही है। तहरीके जदीद हज़रत मुस्लेह मौऊद ने

शुरु ही इस कारण से की थी कि जमाअत के विरुद्ध हर ओर से उपद्रव हो रहा था यहाँ तक कि शासनिक पदाधिकारी भी विरोधियों की पीठ ठोंक रहे थे। तहरीके जदीद का उद्देश्य ही यह था कि तबलीग़ करके जमाअत को बढ़ाया जाए तथा दुनिया क हर देश में जमाअत अहमदिया के द्वारा इस्लाम का झंडा लहराया जाए। अतः यह अहमदिया जमाअत के माध्यम से इस्लाम में आए हुए लोग हैं जो ईमान, विश्वास तथा क़ुर्बानी देने में उदाहरण स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। घटनाएँ तो अनेक हं किन्तु उन सबको यहाँ इस समय बयान नहीं किया जा सकता।

तहरीके जदीद के संदर्भ में और अधिक तथा उसकी ऐतिहासिक पृष्टभूमि भी बता दूँ। जमाअत के विरुद्ध हर एक दिशा से उपद्रव एवं फ़साद उठ रहा था विशेषतः अहरार पार्टी ने तो फ़साद पदा करने के लिए अपना पूरा ज़ोर लगा दिया था और यह नारा था कि अहमदियत के अस्तित्व का विनाश कर देंगे, क़ादियान का नाम व निशान मिटा देंगे तथा क़ादियान की ईंट से ईंट बजा देने की बातें होती थीं यहाँ तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मज़ार तथा पवित्र स्थलों के अनादर की योजना थी तथा शासन की ओर से भी विरोधियों को सहयोग मिलता नज़र आता था बावजूद इसके कि उस समय अंग्रेज़ सरकार थी। बजाए फ़ितना मिटाने के उनका समर्थन किया जाता था तो इन परिस्थितियों में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने जमाअत को एक योजना देकर तहरीक की, जिसमें धन की क़ुर्बानी की ओर भी ध्यान दिलाया गया। यह 1934 की बात है। आप रज़ी. ने फ़रमाया तथा बताया कि कई बार क़ुर्बानियाँ लम्बी कर देनी पड़ती है तथा महिलाएँ एवं बच्चे भी इसके लिए तय्यार हों। यह केवल पुरुषों का काम नहीं है अपितु महिलाओं को भी अपने दायित्वों को समझना होगा। यद्यपि यह हर एक अहमदी के लिए अनिवार्य नहीं थी उस समय, परन्तु निष्ठा एवं श्रद्धा की बहुमुल्य भावना जमाअत ने दिखाई। अतएव 1934 में आपने यथावत एक फ़न्ड की घोषणा की तथा बताया कि हमने दुशमन के षड्यन्त्रों का उत्तर देना है। आप रज़ी. ने उस समय जमाअत को एक योजना देकर, जिसमें अपना सुधार तथा धन के बलिदान के स्तर को बुलन्द करने की आर ध्यान दिलाया, धन क़ुर्बान करने की भी तहरीक की। उस समय अपना तथा अपने बच्चों का पेट काट कर क़ुर्बानी करने का जो नमूना जमाअत ने क़ायम किया, अल्लाह तआला ने उसको ऐसा क़बूल किया कि जहाँ दुनिया में तबलीग़ के मूल्यवान मार्ग खुले वहाँ ये बलिदान उन तक ही सीमित न रहे बल्कि आज भी ऐसे नमूने हमें नज़र आते हैं, जैसा कि इन वृत्तांतों में मैंने बयान किए हैं। अतएव इन लोगों ने जहाँ धन के बलिदान दिए वहाँ दीन के लिए अपने जीवन भी वक़्फ़ किए, दूर सुदूर के देशों में तबलीग़ के लिए गए तथा कुछ निष्ठावान लोगों को क़ैद होने तथा बन्दी बनाए जाने के कष्ट भी सहन करने पड़े। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने शुरु में इस तहरीक को दस साल के लिए आगे बढ़ा दिया था तीन साल से, फिर दस साल कर दिया था, फिर दस साल पूरे होने पर इसके सुन्दर परिणाम प्रकट होने पर तथा अधिक क़ुर्बानियाँ करने वालों की इच्छा पर इसे और आगे बढ़ा दिया और फिर यह स्थाई प्रेरणा बन गई। आज हम अल्लाह तआला की कृपा एवं समर्थन के जो दृश्य देख रहे हैं व उन आरम्भिक लोगों की क़ुर्बानियों का ही परिणाम है जिसे अल्लाह तआला ने क़बूल फ़रमाया बल्कि अब भी नए शामिल होने वालों को कई बार सपनों के द्वारा इस तहरीक में तथा धन के बलिदान की ओर ध्यान दिलाया गया है, जैसा कि मैंने घटनाएँ बयान की हैं। उन आरम्भिक क़ुर्बानी करने वालों की पीढ़ियों को आज भी अपने पूर्वजों की क़ुर्बानियों को याद रखते हुए जहाँ

स्वयं तथा अपनी नस्लों को इन क़ुर्बानियों के सिलसिले को जारी रखने की कोशिश करनी चाहिए वहाँ अपने ऊपर जो कृपाएँ हुई हैं उस पर स्वयं भी अधिक से अधिक क़ुर्बानी करनी चाहिए।

हुज़ूर ने फ़रमाया- पहले मैं तहरीके जदीद के फल का, जो हमें नज़र आए बता दूँ। आरम्भ में तो हम क़ादियान से बाहर नही निकल रहे थे अथवा हिन्दुस्तान तक थोड़े से फैले हुए थे परन्तु अब दुनिया के 220 देशों में मस्जिदों की संख्या नौ हज़ार तीन सौ से ऊपर है। मिशन हाउसिज़ की संख्या तीन हज़ार चार सौ से ऊपर है तथा कई मस्जिदें अभी, दर्जनों मस्जिदें अभी बन रही हैं, मिशन हाउस भी बन रह हैं, निर्माणाधीन हैं। मुबल्लिग़ों की संख्या तथा मुअल्लिमों की संख्या दुनिया में लगभग पाँच हज़ार है, यह अभी बढ़ रही है। अल्लाह की कृपा से क़ुर्आन करीम के अनुवाद भी हो रहे हैं, सतत्तर(77)भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं। लिट्रेचर छप रहा है, विभिन्न भाषाओं में लिट्रेचर का अनुवाद हो रहा है तथा अत्यधिक काम इसके द्वारा हो रहा है जो तहरीके जदीद की योजना से शुरु हुआ, यद्यपि इसमें अन्य चन्दे भी शामिल हुए हैं परन्तु तहरीक जदीद का भी बड़ा योगदान है।

इस वर्ष विश्व स्तरीय जमाअत को 17.20 लाख पाउन्ड की क़ुर्बानी पेश करने की तौफ़ीक़ मिली, अलहम्दुलिल्लाह। वसूली गत वर्ष की तुलना में 7 लाख 49 हज़ार पाउंड अधिक है।

सामूहिक वसूल की दृष्टि से पाकिस्तान के अतिरिक्त पहली दस जमाअतें जर्मनी, बर्तानिया, कैनेडा, अमरीका, मिडिल ईस्ट की एक जमाअत, छटे नम्बर पर भारत, आस्ट्रेलिया, इन्डोनेशिया, मिडिल ईस्ट की एक जमाअत, जबकि दसवें नम्बर पर घाना रही।

इंडिया के जो दस प्रदेश हैं उनमें नम्बर एक पर केरला फिर तमिलनाडु, कर्नाटक, तिलंगाना, जम्मु एंड कशमीर, उडीशा, पंजाब, बंगाल, देहली तथा महाराष्ट्र। क़ुर्बानी की दृष्टि से दस जमाअतें कोइम्बटूर, तमिलनाडु, क़ादियान, हैद्राबाद, कालीकट, मंजेरी, मेलियापालियम, बंगलौर, कलकत्ता, करूलाई तथा केरंग।

अल्लाह तआला इन सब क़ुर्बानी करने वालों के जान व माल में बरकत अता फ़रमाए तथा पहले से बढ़ कर क़ुर्बानियाँ देने वाले हों ये लोग।

फ़लिस्तीन का दुआओं में सदैव याद रखें, उन्हें नहीं भूलें, महिलाएँ तथा बच्चे जिस अत्याचार की चक्की में पिस रहे हैं, अल्लाह तआला जल्दी उनकी रिहाई के सामान फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131